Journal of Social Review and Development, 2024; Special 1:68-70 ISSN NO: 2583-2816

Special Issue

"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

सतत विकास लक्ष्यों को आकार देने में भारत की भूमिका

नीशू वर्मा[1] और डॉ0 प्रवेश कुमार[2]

[1] शोधार्थिनी, एम0 जे0 पी0 आर0 यू0, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा संकाय, राजकीय रजा पी0 जी0 कॉलेज, रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: नीशू वर्मा

सारांश

भारत में सतत विकास का लक्ष्य समृद्धि और समाज की सामर्थ्यवादी विकास को प्रोत्साहित करना होता है। यह विकास न केवल आर्थिक विकास को संकल्पित करता है, बल्कि साथ ही सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक विकास को भी समाहित करता है। भारत सरकार ने अनेक योजनाओं को शुरू किया है जो समृद्धि, समावेशी विकास, और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखते हैं। इनमें से कुछ मुख्य योजनाएं जैसे मेक इन इंडिया, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं, स्वच्छ भारत अभियान, आयुष्मान भारत, और डिजिटल इंडिया हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में विकास को संभालने के लिए कार्य कर रही हैं। विकास का अर्थ यह नहीं है कि केवल आर्थिक स्तर पर गति हो, बल्कि इसका ध्यान सामाजिक न्याय, जल, वन, और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विकास को भी मिलना चाहिए। इस प्रकार, सतत विकास का लक्ष्य है एक समृद्ध, समावेशी, और समृद्ध भारत की सामर्थ्यवादी निर्माण को प्रोत्साहित करना।

मूलशब्दः सतत विकास, लक्ष्य, भारत

परिचय

सतत विकास लक्ष्यों को आकार देने में भारत की भूमिका

भारत एक विशाल और विविध देश है जो अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक धरोहर के साथ समृद्ध है। यहां के लोगों ने दुनिया को अपने योगदान, अद्वितीय विचारधारा, और तकनीकी उत्कृष्टता से प्रभावित किया है। भारत की भूमि ने शांति और प्रगति की एक अद्वितीय परंपरा को जन्म दिया है और आज भी विकास की प्रेरणा के रूप में अग्रणी है। सतत विकास लक्ष्यों को आकार देने में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत ने अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही विकास के क्षेत्र में अद्वितीय प्रगति दर्ज की है, और इसका निरंतर अभियान अब भी जारी है।

- भारत ने अपने आर्थिक संकल्प को सुदृढ़ किया है। लोगों के जीवन में सुधार करने के लिए, भारत ने उच्च दर की आर्थिक विकास और वृद्धि के लिए योजनाएं शुरू की हैं। अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए उद्यमिता, निवेश, और उद्योगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- भारत ने शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। शिक्षा के माध्यम से समाज को सशक्त और उत्कृष्ट बनाने के लिए, भारत ने बच्चों के लिए मुफ्त और गुणवत्ता की शिक्षा को बढ़ावा दिया है। यह उन्हें न केवल अधिक ज्ञान के साथ लैस करता है, बल्कि उन्हें नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति भी जागरूक बनाता है।
- भारत ने आरोग्य सेवाओं के क्षेत्र में भी विकास की प्रेरणा दी है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजनाओं के माध्यम से, भारत ने आर्थिक रूप से कमजोर और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों की स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार किया है।
- भारत ने पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए अनुकूलन विकास के माध्यम से विकास किया है। उन्होंने स्वच्छता, जल संरक्षण, और पर्यावरणीय संरक्षण को महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में रखा है और सुनिश्चित किया है कि विकास की प्रक्रिया में पर्यावरण को हानि न हो।

अंततः, भारत ने सामाजिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा देने के लिए उपाय किए हैं। उन्होंने महिलाओं, अल्पसंख्यक समुदायों, और अन्य पिछड़े वर्गों को उनके हक की सुनिश्चित करने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। भारत की भूमिका विश्व में अग्रणी है जब बात सतत विकास के लक्ष्यों को आकार देने की आती है। भारत के प्रयासों ने आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है और उसने दुनिया को दिखाया है कि विकास और प्रगति का मार्ग केवल सुगम नहीं, बल्कि उत्तेजक और उत्साहवर्धक भी हो सकता है। इस प्रकार, भारत की भूमिका न केवल उसके अंदर ही सीमित है, बल्कि यह एक विश्व स्तरीय मानक भी है।

सतत विकास के लक्ष्यों का इतिहास

सतत विकास के लक्ष्यों का इतिहास लंबा और समृद्ध है। यहां कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग हैं :

- **यू.एन. की स्थापनाः** सतत विकास के लक्ष्य का विचार पहली बार संयुक्त राष्ट्र गठित किया गया, जब गैर–सरकारी संगठनों, सरकारों, और अन्य संगठनों ने अपने संयुक्त शासन में विकास के लिए साझा लक्ष्यों की आवश्यकता को महसूस किया।
- **मिलेनियम विकास लक्ष्यः** सन 2000 में, संयुक्त राष्ट्र ने मिलेनियम विकास लक्ष्य की घोषणा की, जिनमें गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य, और जेंडर समानता जैसे कई क्षेत्रों में प्रगति के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए।
- **स्थायी विकास लक्ष्यः** 2015 में, मिलेनियम विकास लक्ष्यों की समाप्ति के बाद, संयुक्त राष्ट्र ने स्थायी विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की घोषणा की, जिनमें 17 लक्ष्य और 169 संदर्भांकित उद्देश्य शामिल हैं।

- **संयुक्त राष्ट्र समितिः** संयुक्त राष्ट्र के अंतरराष्ट्रीय समिति (एसडीजी) विकास के लिए एक महत्वपूर्ण वातावरण प्रदान करता है, जो सदस्य देशों को विकास लक्ष्यों के संग्रहण, अभियोजन, और प्रगति की निगरानी में सहायता प्रदान करता है।
- **प्रभावः** सतत विकास के लक्ष्यों का विस्तार करने का प्रयास हर स्तर पर हो रहा है, लेकिन विकास की राह में कई चुनौतियां हैं, जैसे कि वित्तीय संसाधनों की कमी, संवेदनशीलता, और विभाजन।

सतत विकास के लक्ष्यों का इतिहास उनकी महत्वपूर्ण यात्रा का प्रतिबिम्ब है, जो एक समृद्ध और संतुलित समाज की ओर बढ़ते हैं।

सतत विकास लक्ष्यों की सूची

सतत विकास के लक्ष्य विविधता के साथ 17 विभिन्न लक्ष्यों में विभाजित हैं, जिन्हें स्थायी विकास लक्ष्य के रूप में जाना जाता है। ये लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा 2015 में स्वीकृत किए गए थे। निम्नलिखित हैं वे 17 लक्ष्य :

- **गरीबी का समापनः** सभी रूपों से गरीबी को समाप्त करना।
- **अनिवार्य शिक्षाः** सभी के लिए गुणवत्ता परक और समान शिक्षा प्रदान करना।
- **स्वास्थ्य सुविधाएंः** सभी के लिए स्वास्थ्य और वेतन की सुविधा प्रदान करना।
- **जेंडर समानताः** लड़कियों और महिलाओं के लिए समानता को प्रोत्साहित करना।
- **जलवायु परिवर्तनः** जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों का सामना करना।
- **शुद्ध जल और स्वच्छताः** शुद्ध पानी और स्वच्छता के लिए पहुंच बढ़ाना।
- **ऊर्जा सुरक्षाः** सस्ती और शुद्ध ऊर्जा के प्रदान को सुनिश्चित करना।
- **आर्थिक उत्थानः** समृद्धि और आर्थिक उत्थान को सुनिश्चित करना।
- **उद्यमिता और औद्योगिक इनोवेशनः** उद्यमिता को बढ़ावा देना और औद्योगिक इनोवेशन को समर्थ बनाना।
- **कम असमानताः** समानता के लिए विभिन्न सेक्टरों में असमानता को कम करना।
- **सही शहरीकरणः** बदलावपूर्ण, समृद्ध और शहरीकृत समुदायों को बनाना।
- **सही जलवायु कार्यवाहीः** सही जलवायु कार्यवाही लेना।
- **समर्थ संसाधन प्रबंधनः** समर्थ संसाधन प्रबंधन की दिशा में गतिशीलता।
- **शांति और न्यायः** शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं बढ़ाना।
- **संजीवनी समुदायः** जीवित, जागरूक और संवेदनशील समुदाय बनाना।
- **पारदर्शिता और अच्छा शासनः** पारदर्शिता, संवेदनशीलता, और अच्छे शासन को बढ़ावा देना।
- **क्षुधा का अंतः** भूखमरी के अंत को सुनिश्चित करना और आहार सुरक्षा को बढ़ाना।

ये लक्ष्य सभी देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं और सभी विकास नीतियों और कार्यक्रमों में इन्हें शामिल किया जाना चाहिए।

सतत विकास लक्ष्यों में चुनौतियाँ

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख विकास चुनौतियों का समाधान करने के उद्देश्य से विभिन्न पहलों और साझेदारियों के माध्यम से भारत में सतत विकास लक्ष्यों का समर्थन करता है। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे संयुक्त राष्ट्र भारत में इनका समर्थन कर रहा है :

- **नीति सलाह और क्षमता निर्माण** : संयुक्त राष्ट्र एसडीजी के साथ राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं को संरेखित करने पर भारत सरकार को नीतिगत सलाह प्रदान करता है। यह प्रभावी एसडीजी कार्यान्वयन के लिए संस्थानों और प्रणालियों को मजबूत करने के लिए क्षमता निर्माण प्रयासों का भी समर्थन करता है।
- **तकनीकी सहायता और ज्ञान साझा करनाः** यूएनडीपी, यूनिसेफ, यूएन महिला और अन्य जैसी अपनी विशेष एजेंसियों और कार्यक्रमों के माध्यम से, संयुक्त राष्ट्र भारत को गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता, जलवायु कार्यवाही और सतत शहरी विकास जैसे क्षेत्रों में तकनीकी सहायता प्रदान करता है। इस सहायता में भारत को अपने एसडीजी लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं, विशेषज्ञता और ज्ञान को साझा करना शामिल है।
- **डेटा और निगरानी समर्थनः** संयुक्त राष्ट्र एसडीजी पर प्रगति को ट्रैक करने के लिए डेटा संग्रह, विश्लेषण और निगरानी तंत्र में सुधार करने में भारत की सहायता करता है। इसमें साक्ष्य–आधारित नीति निर्माण के लिए डेटा उत्पादन और क्षमता निर्माण में राष्ट्रीय सांख्यिकीय एजेंसियों का समर्थन करना शामिल है।
- **साझेदारी और सहयोगः** संयुक्त राष्ट्र एसडीजी कार्यान्वयन के लिए बहु–हितधारक साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार, नागरिक समाज संगठनों, शिक्षाविदों, निजी क्षेत्र की संस्थाओं और अन्य हितधारकों के साथ सहयोग करता है। ये साझेदारियां एसडीजी को प्राप्त करने की दिशा में संसाधन जुटाने, नवाचार और सामूहिक कार्रवाई की सुविधा प्रदान करती हैं।
- **वकालत और जागरूकताः** संयुक्त राष्ट्र एसडीजी की सार्वजनिक समझ को बढ़ावा देने और उनके कार्यान्वयन के लिए समर्थन जुटाने के लिए वकालत अभियान और जागरूकता बढ़ाने वाली गतिविधियों का आयोजन करता है। इसमें एसडीजी के महत्व को बढ़ाने और जमीनी स्तर पर भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए मीडिया, युवा समूहों और सामुदायिक संगठनों के साथ जुड़ना शामिल है।
- **नवाचार और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देनाः** संयुक्त राष्ट्र उन पहलों का समर्थन करता है जो भारत में सतत विकास के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी का उपयोग करती हैं। इसमें डिजिटल समाधान, नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और अन्य नवाचारों को बढ़ावा देना शामिल है जो एसडीजी उपलब्धि में योगदान करते हैं।

भारत में एसडीजी के लिए संयुक्त राष्ट्र का समर्थन बहुआयामी है, जिसमें नीतिगत सलाह, तकनीकी सहायता, साझेदारी, वकालत और नवाचार शामिल हैं, जिसका उद्देश्य अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत भविष्य की दिशा में प्रगति में तेजी लाना है।

सतत विकास के लिए नीतिगत पहल

सतत विकास के लिए कुछ महत्वपूर्ण नीतिगत पहल शामिल हो सकते हैं :

- **शिक्षा और प्रशिक्षण को प्रोत्साहनः** शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से जनसामान्य को शिक्षित बनाने के लिए नीतियों को विकसित करना महत्वपूर्ण है।
- **विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और अभियांत्रिकी (एसटीई) को बढ़ावा देनाः** तकनीकी और वैज्ञानिक उद्यमों के लिए नीतियों का समर्थन करना विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है।
- **रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देनाः** नौकरियों के अवसरों को बढ़ाने के लिए उद्योगों को बढ़ावा देना और उन्हें व्यापारिक मार्गदर्शन प्रदान करना महत्वपूर्ण है।
- **समुचित आर्थिक नीतियाँः** समुचित आर्थिक नीतियों के माध्यम से वित्तीय स्थिरता और समृद्धि को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- **सामाजिक न्याय और समानता को प्रोत्साहित करनाः** समाज में समानता और न्याय को प्रोत्साहित करने के लिए नीतियों को बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

- **पर्यावरण संरक्षणः** वातावरणीय संरक्षण को प्राथमिकता देना विकास के लिए अनिवार्य है। विकासी नीतियों में पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखना चाहिए।
- ये नीतिगत पहलें सतत और समृद्ध विकास की दिशा में महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

सतत विकास के लक्ष्यों का स्थानीयकरण एवं पंचायतों की भूमिका

सतत विकास के लक्ष्यों का स्थानीयकरण एवं पंचायतों की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें सीधे लोगों के संग्रहण के स्तर पर लाने में मदद करता है और उनके विकास में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। निम्नलिखित तरीके से स्थानीय स्तर पर विकास के लक्ष्यों का संशोधन और कार्यान्वयन होता है :

- **विकास की जरूरतों का समीक्षणः** पंचायतों ने स्थानीय स्तर पर विकास की जरूरतों का समीक्षण करने का महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे अपने क्षेत्र में की जाने वाली समस्याओं को पहचानते हैं और उनके समाधान के लिए कार्रवाई करते हैं।
- **स्थानीय संसाधनों का उपयोगः** पंचायतों के माध्यम से स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग किया जाता है। वे स्थानीय जल, भूमि, और मानव संसाधनों को सहज रूप से विकसित करते हैं और उनका उपयोग स्थानीय विकास के लिए करते हैं।
- **सामुदायिक सहभागिताः** पंचायतों की भूमिका में सामुदायिक सहभागिता का महत्वपूर्ण स्थान है। वे स्थानीय स्तर पर लोगों को जोड़ते हैं, उनकी राय और सुझावों को सुनते हैं, और समाधानों के लिए सहयोग करते हैं।
- **कार्यक्रमों का अनुगमन और मूल्यांकनः** पंचायतों ने विकास कार्यक्रमों का संचालन, अनुगमन, और मूल्यांकन करने का महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि कार्यक्रमों का लाभ सीधे और समान रूप से समुदाय के सदस्यों तक पहुंचता है।
- **नैतिकता और संवेदनशीलताः** पंचायतों की भूमिका में नैतिकता और संवेदनशीलता का महत्वपूर्ण स्थान है। वे समुदाय के हित में काम करते हैं और संरक्षण के मामले में नेतृत्व करते हैं।
- **विशेषज्ञ संगठनों के साथ काम करनाः** पंचायतों को विशेषज्ञ संगठनों के साथ सहयोग करने का अवसर मिलता है। इसके माध्यम से वे विकास कार्यक्रमों को विशेषज्ञता और संदर्भ के साथ संचालित कर सकते हैं।
- **साक्षात्कार और प्रोत्साहनः** पंचायतों की भूमिका में साक्षात्कार और प्रोत्साहन का महत्व है। वे उत्साहित करते हैं और सामाजिक और आर्थिक सुधार के लिए नए और नवाचारी विचारों का समर्थन करते हैं।
- **संविदा और अधिकारः** पंचायतों की भूमिका में संविदा और अधिकार का महत्वपूर्ण स्थान है। वे लोगों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करते हैं और उन्हें सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

स्थानीय स्तर पर पंचायतों का योगदान सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है, और यह लोगों को सशक्त बनाता है और उनके विकास में सहायक होता है।

G20 के सतत् विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ते कदम

G20 विश्व की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान धारण करने वाला एक समूह है, जो 19 देशों और यूरोपीय संघ को समाहित करता है। यह समूह ग्लोबल आर्थिक मामलों, वित्तीय स्थिति, विपणन नीति, और अन्य विकास के मुद्दों पर सहयोग करने के लिए बनाया गया है। G20 के सतत विकास लक्ष्यों का संवाहक रूप से उनके कदमों का संक्षेप निम्नलिखित है :

- **आर्थिक विकास और विकासशीलताः** G20 देशों ने आर्थिक विकास और विकासशीलता को प्राथमिकता दी है। उनके उद्देश्यों में अधिक रोजगार, उत्पादकता की वृद्धि, और वित्तीय स्थिरता को सुनिश्चित करना शामिल है।
- **संकलित और समावेशी विकासः** G20 देशों ने विकास के लिए संकलित और समावेशी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया है। इसमें गरीबी की अल्पीकरण, विकासशील उत्पादन का बढ़ावा, और सामाजिक समावेशशीलता शामिल है।
- **पर्यावरण संरक्षण और समुदाय कल्याणः** G20 देशों ने पर्यावरण संरक्षण और समुदाय कल्याण के मामलों पर विशेष ध्यान दिया है। इसमें जलवायु परिवर्तन के साथ लड़ाई, वन्यजीव संरक्षण, और स्वच्छता कार्यक्रम शामिल हैं।
- **साक्षरता और शिक्षाः** G20 देशों ने साक्षरता और शिक्षा को महत्वपूर्ण मुद्दा माना है। उनके लक्ष्य में साक्षरता दरों की बढ़ोतरी, उच्च शिक्षा की उपलब्धता, और उत्कृष्ट शिक्षा संस्थानों का विकास शामिल है।
- **विश्व स्वास्थ्य और मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चरः** G20 देशों ने विश्व स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी है, जैसे कि मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास, नई और प्रभावी बीमा योजनाएं, और जीवनकारी उत्पादों की उपलब्धता।
- **डिजिटल युग और तकनीकी उन्नतिः** G20 देशों ने डिजिटल युग और तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देने का संकल्प लिया है। इसमें डिजिटल अवसरों के उपयोग को बढ़ावा, साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता, और तकनीकी शिक्षा शामिल है।
- **व्यापार और व्यापार सुधारः** G20 देशों ने व्यापार और व्यापार सुधार के लिए उत्साहित किया है। इसमें व्यापारिक बाधाओं को कम करना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नियमों का सुधार, और उद्यमिता को प्रोत्साहित करना शामिल है।
- **सांगठनिक सहयोग और संगठनों का निर्माणः** G20 देशों ने सांगठनिक सहयोग और संगठनों के माध्यम से विकास के लिए एकजुटता को बढ़ावा दिया है। इसमें आधुनिक संगठनों के विकास, साझा अनुसंधान प्रोग्राम, और गतिविधियों के संगठन शामिल हैं।
- **साक्षरता को बढ़ावा और सामाजिक सुरक्षाः** G20 ने आधुनिक दुनिया में साक्षरता को बढ़ावा और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में कदम उठाए हैं। इसमें शिक्षा पहुंच के संवाहक प्रोग्राम, आर्थिक सहायता, और समाज कल्याण कार्यक्रम शामिल हैं।
- **अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और विश्व शांतिः** G20 देशों ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और विश्व शांति के लिए महत्वपूर्ण योजनाएं बनाई हैं। इसमें विश्व सुरक्षा, साझा रक्षा प्रोग्राम, और अंर्तराष्ट्रीय योजनाएं शामिल हैं।

ये सतत विकास लक्ष्य G20 के सदस्य देशों के सहयोग और उनके आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक प्रतिबद्धताओं का परिणाम हैं। इन लक्ष्यों के लिए साझा संघर्ष और साझा दृढ़ता के साथ, G20 देशों ने विश्व के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बालीक्लाइमेट डील, हिंदुस्तान टाइम्स, 2007 दिसंबर 16.
2. आशीष कोठारी, IJPA, 1989, जुलाई–सितंबर.
3. राजनीतिक घोषणा और कार्यान्वयन की योजना, सतत विकास पर जोहान्सबर्ग घोषणा, संयुक्त राष्ट्र, 2003.
4. हमारा सामान्य भविष्य, पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग, ऑक्सफॉड प्रेस, दिल्ली, 1987.
5. सतत विकास पर विशेष अंक, IJPA, IIPA, 1993 जुलाई – सितंबर.
6. डी. सी. बैरी और एस. बास, सतत विकास का मंचनः एरिसोर्सबुक, अर्थस्कैन प्रकाशन, लंदन, 2002.
7. एच. ई. डेल, बियॉन्ड ग्रोथ : द इकोनॉमिक्स ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट, बीकन, बोस्टन, 1996.